नाम- राहुल गोयल
पेपर → पेपर-6
दिनांक - 21-03-22

गुटनिरपेक्षता और भारत

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व धीरे-धीरे मुख्यत: दो गुटो में बँट गया था। एक गुट का नेतृत्व पूँजीवादी देश अमेरिका कर रहा था तो दूसरे गुट का नेतृत्व साम्यवादी देश सोवियत संघ रूस कर रहा था। इन दोनो गुटों की प्रतिद्वंदिता को शीत युद्ध के युग से जाना जाता है जो द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति से सोवियत संघ के विघटन (वर्ष 1990-91) तक चला था।

1940-50 के दशकों में विश्व के अनेक देश उपनिवेशवाद की दासता से स्वतंत्र हुए थे जिनमें भारत भी सम्मिलित है। इन स्वतंत्र हुए राष्ट्रो को अपने गुटों में मिलाने के लिए अमेरिका और सोवियत संघ के बीच होड़ लगगई थी। परन्तु नव स्वतंत्र राष्ट्र किसी भी समूह में शामिल नही होना चाहते थे, उनका मानना था कि यदि वे किसी गुट में शामिल हुए तो वे किसी सैन्य संघर्ष में फँस सकते है जिससे हाल ही मिली स्वतंत्रता का कोई अर्थ नही रह जायेगा। इसलिए ये देश गुटनिरपेक्ष होने की दिशा में चल पड़े।

1946 में भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने गुटनिरपेक्षता की पहली घोषणा की तत्पश्चात 1947 के एशियाई संबंध सम्मेलन में इस पर चर्चा हुई। 1953 में वी के मेनन ने संयुक्त राष्ट्र के एक भाषण में 'नॉन एलाइनमेंट' का इस्तेमाल किया।

वर्ष 1954 में कोलंबो के एक भाषण में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भारत-चीन संबंधों के लिए "पंचशील" सिद्धान्तों को अपनाने की बात कही और यही पंचशील सिद्धांत गुटनिरपेक्षता आंदोलन के आधार बने।

पंचशील सिद्धान्त

एक दूसरे की क्षेत्रीय अखण्डता और संप्रभुता के लिए परस्पर सम्मान	आपसी गैर आक्रामकता	समानता और पारस्परिक लाभ	शांतिपूर्ण सह अस्तित्व
	घरेलू मामलो में आपसी गैर-हस्तक्षेप		

गुटनिरपेक्षता की नेहरू की अवधारणा ने भारत को नव स्वतंत्र राष्ट्रो के मध्य अपनी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिलाई जिन्होंने महाशक्तियों के बीच सैन्य टकराव और पूर्व औपनिवेशिक शक्तियों के प्रभाव के बारे में अपनी चिंताओं को साझा किया। 'गुटनिरपेक्ष आंदोलन' की आधारशिला रखकर भारत नव स्वाधीन राष्ट्रो के नेता के रूप में और संयुक्त राष्ट्र जैसे बहुपक्षीय संगठनों में अपने लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका स्थापित करने में सक्षम था।

गौरतलब है कि 20 सितंबर, 1961 को भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, मिस्र के राष्ट्रपति कर्नल नासिर तथा यूगोस्लोविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो के सहयोग से विश्व की तीसरी शक्ति के रूप में युगोस्लाविया की राजधानी में

गुट निरपेक्ष आंदोलन का गठन किया गया। बेलग्रेड में हुई इस शिखर सम्मेलन में 25 देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए थे। वर्तमान में गुट निरपेक्ष आंदोलन के 120 देश सदस्य है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन के उद्देश्य -

- शीत युद्ध की राजनीति में शामिल नहीं होना और अमेरिका या सोवियत संघ के किसी भी गुट में शामिल नहीं होना।
- नव स्वतंत्र राष्ट्रो की स्वतंत्रता का अनुरक्षण करना व जो देश अभी उपनिवेशवाद के चंगुल में फंसे है उन्हें स्वतंत्र कराने का प्रयास करना।
- सार्वभौमिक परमाणु निशस्त्रीकरण को बढ़ावा देना।
- वैश्विक स्तर पर सैन्य संघर्षो को हतोत्साहित करना व उनसे दूर रहना।
- रंगभेद की नीति का विरोध करना।
- वैश्विक स्तर पर मानवाधिकारों के संरक्षण पर बल देना।

भारत - चीन संघर्ष पर गुटनिरपेक्ष प्रतिक्रिया :-

1961 में अपने प्रथम सम्मेलन के अगले वर्ष 1962 में भारत-चीन युद्ध प्रारंभ होगया भारत को गुटनिरपेक्ष देशो से निराशाजनक प्रतिक्रियाऐं मिली।

भारत पाकिस्तान युद्ध और गुटनिरपेक्षता -

1965 के भारत-पाक युद्ध में शांति स्थापना में गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों की भूमिका में लगातार गिरावट देखी गई यह गिराव भारत-चीन युद्ध से प्रारंभ हुई थी।

1971 का भारत-पाक युद्ध में पाकिस्तान ने यूएसए व चीन के साथ गठबंधन किया और भारत ने सोवियत संघ रूस से। इस ध्रुविकरण ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन को प्रभावित किया। नव उदित बांग्लादेश को मान्यता देने में भी गुट निरपेक्षराष्ट्रों ने समय लिया।

1971 में भारत-सोवियत मैत्री और सहयोग संधि पर हस्ताक्षर, भारत द्वारा परमाणु परीक्षण छोटे देशो के आंतरिक मामलों मे हस्तक्षेप से भारत की गुटनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप मे अपनी छवि खराब की परन्तु यह समय की आवश्यकता थी, भारत ने परमाणु हथियारो के सम्बंध में शांतिपूर्ण इस्तेमाल तथा नो फर्स्ट यूज की नीति अपनाई जिससे गुटनिरपेक्ष के निशस्त्रीकरण के उद्देश्य की पूर्ति उपेक्षा न हो।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थापना के बाद से इसके शिखर सम्मेलन मे भारत के प्रधानमंत्री भाग लेते आ रहे थे। किंतु वर्ष 2016 में भारतीय प्रधानमंत्री ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन (नैम) के सम्मेलन में भाग नहीं लिया तो ऐसा माने जाने लगा को शायद भारत के लिए नैम का महत्व कम हो गया है।

हालाँकि कोविड-19 महामारी के दौरान गुटनिरपेक्ष आंदोलन के 2020 में आयोजित शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आभासी बैठक में शामिल हुए और नैम की प्रासंगिकता के बारे में बात की।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन से विचलन -

नब्बे के दशक में जब गुटनिरपेक्ष आंदोलन कमजोर पड़ा तो भारतीय विदेश नीति में इस आंदोलन का महत्व भी कम हो गया। नैम की तत्व की जगह भारत ने रणनीतिक स्वायत्ता पर बल दिया। चाहे नैम हो या रणनीतिक स्वायत्ता दोनों में ही यूएस विरोधी होने की झलक दिखती है अतः विशेषज्ञों ने इस नीति को उपयोगी नहीं माना।

इसके बाद सरकार ने मल्टी अलायमेंट पर जोर दिया अर्थात भारत अपने हितों के मुताबिक कई संगठनों में शामिल होने लगा। लेकिन इससे भारत की छवि एक अवसरवादी देश के रूप में होने की का खतरा उत्पन्न हो गया।

मल्टी अलायमेंट के बाद 'मुद्दा आधारित साझेदारी' या गठबंधन पर जोर दिया गया। लेकिन भारत की विदेश नीति का यह तत्व भी धीरे-धीरे ठण्डे बस्ते में चला गया।

अभी हाल ही में विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारत की विदेश नीति में 'एडवांसिंग प्रोस्पेरिटी एण्ड इन्फ्लुएंस' के तत्व को प्रमुखता से अपनाया

हालाँकि विदेश मंत्री ने यह स्पष्ट किया कि भारतीय विदेश नीति नेम (NAM) के तत्व पर कम बल देने लगी है तो इसका तात्पर्य यह नहीं कि भारत किसी गठबंधन का हिस्सा होने जा रहा है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन की चुनौतियाँ

- क्षेत्रीय प्रतिद्वंदता और भूमंडलीकरण के कारण राज्यों की आपसी निर्भरता बढ़ गई है। जिससे आंदोलन का मुख्य तत्व कमजोर हुआ है।
- अनेक वैश्विक व क्षेत्रीय मुद्दों पर सदस्य देशों के मध्य असहमति है।
- वर्तमान में सदस्य राज्य विभिन्न गठबंधनों में शामिल है।
- सदस्य राज्य आपसी मतभेदों को दूर करने में असफल रहे जैसे भारत-चीन मतभेद, इराक-ईरान युद्ध आदि।
- कई सदस्य राज्यों ने आंदोलन के उद्देश्यों से समझौता कर लिया है जैसे परमाणु परीक्षण अमेरिकी सैन्य समझौता, क्वाड समझौता आदि
- नेम के समक्ष नये गंभीर चुनौतियाँ है जैसे जलवायु परिवर्तन, शरणार्थियों की समस्या, आतंकवाद, मानव तस्करी, ड्रग तस्करी, मनी लॉन्ड्रिंग आदि।

वर्तमान में मानवता कई दशको के सबसे बड़े संकट से गुजर रही है। इस समय गटनिरपेक्ष देश वैश्विक एकजुटता को प्रोत्साहित करने में सहायक हो सकते हैं। गुटनिरपेक्ष देश हमेशा विश्व का नैतिक स्वर रहे है और इस भूमिका को निभाने के लिए गुट निरपेक्ष देशों को समावेशी रहना होगा। कोविड -19 महामारी से वैश्विक परिदृश्य में परिवर्तन आया है। ऐसे मे हमें नयी व्यवस्थाओं की आवश्यकता होगी

वर्तमान मे जारी युक्रेन - रूस युद्ध में भारत की गुटनिरपेक्ष नीति स्पष्ट दिखाई देती है भारत ने तटस्थ रहकर रूस का न तो विरोध किया न ही समर्थन। भारत ने न्यूट्रल रह कर अपने हितो को साधा है।

भारत को केवल आर्थिक उन्नति ही नहीं बल्कि मानव कल्याण को भी प्रोत्साहित करना चाहिए भारत ने लंबे समय तक इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन को सशक्त करने मे भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है एवं भारत को हमेशा यह प्रयास करना चाहिये कि गुटनिरपेक्ष देश अंतर्राष्ट्रीय राजनीति मे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करें।

प्रश्न-2 परिवर्तन प्रकृति का नियम है।

Page No.
Date:
www.mirajmulticolour.com

अल्फ्रेड लॉर्ड टेनीसन की कविताओं में से एक में, बहादुर और साहसी लड़ाकू मैकआर्थर गंभीर रूप से घायल हो गया है और मरने वाला है। उसका जनरल बेडिवेरे दुखी होता है और उससे पूछता है कि वे उसके बिना क्या करेगा। मैकआर्थर कहते हैं: "पुराने क्रम में परिवर्तन होता है तो नये को स्थान मिलता है।" तब से यह रेखा एक पंक्ति एक कहावत बन गई है क्योंकि इसमें जीवन की महान वास्तविकता है- परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है।

प्रकृति की सभी अभिव्यक्तियाँ - सूर्य, चंद्रमा, तारे, पेड़-पौधे, महासागर, पहाड़, नदियां, पशु, पक्षी और मनुष्य सभी परिवर्तन से गुजरते हैं। प्रकृति में जो जन्मा है व मृत्यु को अवश्य प्राप्त होगा। ब्रह्माण्ड में सूर्य, आकाशगंगाऐं, पृथ्वी सभी ग्रह तारे इनका जन्म करोड़ो वर्षो पूर्व हुआ परन्तु इनका जीवनकाल निश्चित एक समय बाद ये भी नहीं रहेंगे। रोज कई तारे जन्म लेते है और मरते भी है। एक समय ऐसा आयेगा जब पृथ्वी का भी अंत हो जायेगा। ब्लैक होल तारों को निगल जाता है। ब्रह्माण्ड में भी नित परिवर्तन हो रहा है वह लगातार विस्तारित हो रहा है।

पृथ्वी भी परिवर्तन शील है, जब पृथ्वी का जन्म हुआ था तब वह आग का गोला थी, समय के साथ वह ठंडी हुई उसपर महासागरो का विस्तार हुआ और जीवन पनपने लगा। पृथ्वी अपने अक्ष पर

पश्चिम से पूर्व की ओर लगातार घूर्णन कर सूर्य की परिक्रमा कर रही । पृथ्वी के घूर्णन के कारण ही पृथ्वी पर दिन व रात की घटना घटित होती है । पृथ्वी के $23\frac{1}{2}$ झुकाव के कारण ऋतु का निर्माण हुआ जो परिवर्तनीय है एक ऋतु के बाद दूसरी ऋतु आती, शर्दी के बाद गर्मी, गर्मी के बाद बरसात और बरसात के बाद पुन शर्दी आजाती है यह क्रम निरंतर चलता रहता है।

मानव सभ्यता लगभग 4000 वर्ष पुरानी है जो ब्रम्हाण्डीय समय की तुलना मे बहुत छोटा है। इस अवधि के दौरान मनुष्य की जीवन शैली मे बहुत बदलाव आया है । एक समय था जब मनुष्य गुफाओं मे रहता था, जानवरो की खाल, पत्ते पहनता था और भोजन के लिए जानवरों का शिकार करता था । उन्होने खानाबदोश जीवन व्यतीत किया । मनुष्य के जीवन मे परिवर्तन तब आया जब वह बड़ी संख्या में नदी किनारे बस गया और फसल उगाना सीखकर एक बसा हुआ जीवन जीने लगा यह सभ्यता की शुरुआत थी ।

पहिये के आविष्कार से लोग दूसरी जगहों पर जाने लगे । अन्य सभ्यताओं के साथ व्यापार फला-फूला, माल के आदान प्रदान से सूचनाओं का संप्रेषण भी होने लगा था । धातुओ के आविष्कार, खनिजों के खनन विभिन्न व्यापारों का विकास हुआ । विभिन्न महाद्वीपों की सभ्यताओं

का स्थान विभिन्न देशों ने ले लिया । सत्ता के माध्यम से युद्धों के लगातार परीक्षणों के बाद विभिन्न कुलों और समुदायों ने इन राष्ट्रों पर शासन किया । मनुष्य अपनी आदिम जीवन शैली से बहुत तेजी से आगे निकल चुका था ।

19 वीं और 20वीं सदी को वैज्ञानिक खोजों का काल कहा जाता है । भाप इंजन, बिजली, बल्ब, टेलीफोन, टीवी, कंप्यूटर - सब का आविष्कार इसी काल में हुआ । मनुष्य ने बड़े - बड़े जहाज बनाकर शक्तिशाली महासागरों पर विजय प्राप्त की और हवाई जहाज बनाकर पहाड़ों पर विजय प्राप्त की नई तकनीकों के प्रयोग ने मनुष्य के जीवन को आरामदायक बना दिया है

त्वरित यात्रा के लिए कार, हवाई जहाज, बुलेट ट्रेन, सड़के है ; विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ खरीदने के लिए मॉल और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स ; बैंको को उसके वित्तीय लेनदेन की देखभाल करने के लिए ; अस्पतालों और क्लीनिकों के मे स्वास्थ्य की देखभाल करने के लिए और विभिन्न प्रकार की बीमारियों मे राहत प्रदान करने के लिए हजारों प्रकार की दवाएँ ; विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए स्कूल, कॉलेज विश्वविद्यालय और अन्य शैक्षणिक संस्थान । परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी लेकिन निश्चित रही है । यह अभी भी चल रहा है । आज से सौ

साल बाद की दुनिया आज जो हम देखते हैं उससे बहुत अलग हो सकती है - क्योंकि सब कुछ परिवर्तन के महान नियम के तहत है।

हमारे महान राष्ट्र - भारत ने पिछले 3500 वर्षों में बड़े बदलाव देखे हैं। सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता का विकास हुआ फिर वैदिक युग का प्रारंभ हुआ, मौर्य, कुशाल एक पहलव गुप्त शासकों के अधीन यह महिमा के शिखर पर पहुँच गया। विभिन्न स्थानीय शासकों के बीच संघर्ष के कारण सामाजिक मूल्यों और आर्थिक समृद्धि में गिरावट आई। विदेशी आक्रमकारियों ने बार-बार इसके धन को लूटा। सलतनतकाल, मुगलकाल, ब्रिटिश काल को देखा है भारत ने।

1947 में जब देश आज़ाद हुआ तब देश गरीबी, बेरोजगारी, पिछड़ापन, सामाजिक बुराईयां थीं। संस्थापको ने लोकतांत्रिक स्वरूप को अपनाया और देश को सशक्त बनाने का प्रयास किया वर्तमान में भारत विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में गिनी जाती है।

मानव जीवन स्वयं निरंतर परिवर्तनों के अधीन है। जब बच्चा पैदा होता है तो वह छोटा व कमज़ोर होता फिर वह युवा होता तो मज़बूत व बड़ा बन जाता है तत्पश्चात बूढ़ा होने पर फिर कमज़ोर हो जाता है और मर जाता है। रोज़ कई लोग मरते हैं और कई जन्म लेते हैं।

गीता में लिखा है,
परिवर्तन ही संसार का नियम है और
सांसारिक परिवर्तन के अनुसार स्वयं में
बदलाव लाना मनुष्य की जरूरत है।

जो हुआ वह अच्छा हुआ,
जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है,
जो होगा, वह भी अच्छा होगा।
तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो?
तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया?
तुमने क्या पैदा किया, जो नष्ट हो गया?
तुमने जो लिया, यहीं से लिया;
जो दिया, यहीं पर दिया;
जो आज तुम्हारा है,
कल किसी और का था,
कल किसी और का होगा।

परिवर्तन ही संसार का नियम है।

प्रश्न-3

Page No.
Date:

प्रतिवेदन

दिनांक - 25/03/2022

विषय - इंदौर स्वच्छता

महोदय,
विदित है कि वर्ष 2014 से स्वच्छ भारत अभियान का प्रारंभ किया गया था। इंदौर ने इसे अपना बीज मंत्र बना लिया। तत्कालीन नगर निगम कमिश्नर और वर्तमान कलेक्टर मनीश सिंह ने योजना बनाई, तत्कालीन महापौर मालिनी गौड़ ने राजनीतिक समर्थन दिया और नागरिको का साथ जोड़ा। सफाई कर्मीयों को प्रशिक्षित किया, आधुनिक सफाई मशीने खरीदी, नागरिको से गीला व सूखा कचरा पृथक-पृथक एकत्र करवाया, नगर निगम की 700 कचरा गाड़ियां घर-घर जाकर कचरा एकत्र करती है। और इस गीले कचरे से सीएनजी गैसें बनाई जाती है जिससे शहर की 400 से अधिक बसें संचालित होती है। शहर में अशुद्ध जल को उपचारित कर उसका उपयोग पेड़-पौधो को सींचने मे किया जाता है इस कारण वर्तमान मे इंदौर 'वाटर प्लस' शहर भी बन गया है। यही कारण है कि जब से स्वच्छता सर्वेक्षण रिपोर्ट प्रारंभ हुई है तब से इंदौर लगातार देश का सबसे स्वच्छ शहर होने का खिताब जीतता आया है। वर्तमान मे 2021 के स्वच्छता सर्वेक्षण मे इंदौर पांचवी बार सबसे स्वच्छ शहर बन गया वर्तमान मे इंदौर स्वच्छता का छक्का लगाने की तैयारी कर रहा है।

प्रतिवेदक

जिलाधीश कार्यालय,
जिला उज्जैन,
म०प्र०

पत्रांक जि.क्र० फाइल न./जावक न. उज्जैन दिनांक -/-/-

आदेश

यह आदेशित किया जाता है कि होली के अवसर पर हानिकारक रंगो के विक्रय पर प्रतिबंध लगाया जा रहा है। चूंकि कई रंगों में हानिकारक रसायनों का प्रयोग किया जाता है जो चर्म रोग, श्वांस रोग आदि का कारण बनते है। जो भी इन रंगों का विक्रय करते पाया गया उसे दण्डित किया जावेगा।

संलग्न
1) उक्तवत

हस्ताक्षर
जिलाधीश,
उज्जैन,
मध्यप्रदेश

प्रत्यांकन जि.क्र. फाइल न./बढ़ते क्रम उज्जैन दिनांक -/-/-

प्रतिलिपि

1) एस डी एम समस्त, उज्जैन की ओर सूचनार्थ।
2) जिला व्यापारी महासंघ अध्यक्ष उज्जैन की ओर सूचनार्थ।
3) तहसीलदार समस्त उज्जैन की ओर सूचनार्थ।
4) पुलिस अधीक्षक, उज्जैन की ओर सूचनार्थ।